

## जैन विद्या एवं प्राकृत (फोल्डर नं. ०१४०२६)

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय

विषय-सूची

जैन श्रमण परम्परा-इतिहास, कला और संस्कृति

जैन श्रमण परम्परा का दर्शन-----	१-६
जैनधर्म और संस्कृति-----	७-१४
समन्वय की साधना और जैन संस्कृति-----	१५-२३
जैन एवं बौद्धधर्म-----	२४-२७
भारतीय संस्कृति में जैन धर्म-----	२८-३२
भारतीय विचारधारा और जैन दृष्टि-----	३३-३७
जैन कला का अवदान-----	३८-६१
गुजरात में जैनधर्म और जैनकला-----	६२-७२
जैन शासक अमोघवर्ष प्रथम-----	७३-७८
Emperor Kharavela and the Jaina Tradition in Orissa-----	79-82

जैन चिन्तन और समाज विज्ञान

जैन शास्त्रों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्त्वों का मानव वैज्ञानिक अध्ययन-----	८५-९१
Jain Contribution to Indian Society-----	92-98
The sociological and historical background....-----	99-106
सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरप्रदेश के कतिपय विशिष्ट जैन व्यापारी-----	१०७-१२३
अपराजितपृच्छा में चित्रित सामाजिक दशा-----	१२४-१२७
जैन पुराणों में वर्णित प्राचीन भारतीय आभूषण-----	१२८-१४०
जैनयोग, आधुनिक संत्रास एवं मनोविज्ञान-----	१४१-१४९
जैन शिक्षा-उद्देश्य एवं विधियाँ-----	१५०-१५६
Jain Path of Education-----	157-164

जैन धर्म-दर्शन और विज्ञान

Anekanta and Problem of Meaning-----	167-176
Works on anupreksa in Kannada Literature-----	177-184
जैन आगमों में सूक्ष्म शरीर की अवधारणा और आधुनिक विज्ञान-----	१८५-१९०
जैनदर्शन में कर्मवाद और आधुनिक विज्ञान-----	१९१-१९३
Scientific Contents of Jaina Canons-Astapahuda by Kundakunda-----	194-205
On Contribution of Jainology to Indian Karma Structures-----	207-217

प्राकृत, भारतीय भाषाएँ और साहित्य

Date of Second Middle Indo-Aryan A Fresh Chronological Estimate-----	221-224
Assimilation of Conjunct consonants in Prakrit and Greek-----	225-228
The Prakrit-A Review-----	229-235
The Prakrit in Karnataka-----	236-239
सांस्कृतिक संकट के बीच प्राकृत-----	२४०-२५०

पालि और प्राकृत -----	२५१-२५६
प्राकृत भाषा-एक अविच्छिन्न धारा -----	२५७-२६२
वैदिक भाषा में प्राकृत के तत्त्व -----	२६३-२८३
प्राकृत तथा अन्य भारतीय भाषाएँ -----	२८४-३००
आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास और प्राकृत तथा अपभ्रंश -----	३०१-३०७
अपभ्रंश एवं हिन्दी जैन साहित्य में शोध के नये क्षेत्र -----	३०८-३१६
अपभ्रंश और हिन्दी में जैनविद्या विषयक अनुसन्धान की संभावनाएँ -----	३१७-३२४
<b>परिशिष्ट</b>	
प्राकृत एवं जैनागम विभाग -----	३२५-३२७
जैनविद्या एवं प्राकृत-राष्ट्रीय संगोष्ठी-१९८१ -----	३२८-३३२
संगोष्ठी एवं परिचर्चा में सम्मिलित विद्वान -----	३३६